International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 March – April - 2026

डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य

सोनम आहेर

अनुसंधान केंद्र – हिंदी विभाग

शोध छात्रा, संगमनेर नगरपालिका कला, दा. ज. मालपाणी वाणिज्य एवं ब. ना. सारडा विज्ञान महाविद्यालय (स्वशासी), संगमनेर

Corresponding Author – सोनम आहेर

DOI - 10.5281/zenodo.20485612

प्रस्तावना:

आज का युग डिजिटल युग के नाम से भी जाना जाता है। आज छोटे-छोटे बच्चों की पाठशालाएं भी डिजिटल बन चुकी है क्योंकि उसमें बच्चों को अधिक अच्छे तरीके से पढ़ाया जाता है और बच्चों को आसानी से समझता भी है। ऐसा ही हिंदी भाषा और साहित्य के लिए भी हुआ है। डिजिटल युग ने मानव जीवन के हर पहलू को गहरे रूप से प्रभावित किया है उसी प्रकार इसने भाषा और साहित्य को भी अछूता नहीं रखा। हिंदी भाषा भारत में सबसे अधिक व्यापक रूप से बोली और समझे जाने वाली भाषा है और डिजिटल युग ने हिंदी भाषा को भी एक उच्च स्तर पर बिठाया है। यह युग स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, इंटरनेट से जुड़ा हुआ है और इसी से हिंदी भाषा को और अधिक विस्तृत एवं व्यापक बनाने का कार्य भी इन्होंने किया है।

हिंदी का इतिहास और सांस्कृतिक समृद्धि अत्यंत व्यापक है। यह एक विशाल भंडार है। इसने भाषा, साहित्य, संगीत, काव्य और दर्शन आदि का समावेश आता है। लेकिन डिजिटल युग में हिंदी का स्वरूप और उपयोग बदल रहा है। इंटरनेट की शुरुआत के साथ हिंदी सामग्री का प्रसार पहले की तुलना में कई अधिक व्यापक हो गया है। आज यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर, सोशल मीडिया, पोस्ट, ब्लॉक, वेबसाइट और ऑनलाइन समाचार पत्रिकाएं हिंदी में उपलब्ध हैं जो लाखों लोगों तक पहुंच रही है। यह एक सकारात्मक बदलाव है क्योंकि यह हिंदी को उन लोगों तक ले जा रहा है जो शायद पहले केवल अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के डिजिटल कंटेंट तक सीमित थे। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्र में जहां हिंदी बोलने वालों की संख्या अधिक है। स्मार्टफोन और सस्ते इंटरनेट डाटा ने हिंदी सामग्री की खपत को बढ़ावा दिया है। हिंदी भाषा की यह डिजिटल उपस्थिति केवल मनोरंजन या समाचार तक सीमित नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में भी हिंदी में डिजिटल सामग्री तेजी से बढ़ रही थी। उदाहरण के लिए ऑनलाइन शिक्षण मंचों पर हिंदी में पाठ्यक्रम उपलब्ध है। जो उन छात्रों के लिए वरदान साबित हो रहे हैं जो अंग्रेजी में सहज नहीं है। इसी तरह स्वास्थ्य और कृषि से संबंधित जानकारी हिंदी में उपलब्ध होने से आम लोगों को अपने जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिल रही है। यह हिंदी भाषा की प्रासंगिकता को दर्शाता है और यह भी दिखाता है कि डिजिटल युग में हिंदी भाषा केवल सांस्कृतिक प्रतिक नहीं बल्कि एक जीवंत और उपयोगी माध्यम बन रही है।

साहित्यिक दुनिया में ई-बुक्स और किंडल ने एक नै लहर पैदा की है। पारम्परिक प्रकाशन के साथ-साथ स्वप्रकाशन का चलन भी बढ़ा है। आज के पीढ़ी के कई नए

लेखक फेसबुक, इंस्टाग्राम, जैसी जगहों पर अपनी कवितायेँ, लघुकथाएं प्रस्तुत कर रहे है। जिससे साहित्य अधिक समावेशी और जनकेन्द्रित हो गया है।

डिजिटल युग की वजह से साहित्य के सृजन, प्रसार और उपभोग की पद्धतियों को मौलिक रूप से बदल दिया गया है। पहले साहित्य केवल मुद्रित पन्नो तक ही सिमित था किन्तु डिजिटल युग के कारण अब यह मुद्रित साहित्य स्क्रीन और ऑडियो के माध्यम से वैश्विक हो चूका है। जिन लोगों को पदजना अच्छा नहीं लगता वह इस साहित्य को ऑडियो के माध्यम से सुनते है और उस संस्कृति को जानने की, समझने की कोशिश करते है।

डिजिटल युग के इस दौर में ऐसे मंच और प्रवृतियां विकसित हुई है, जिसके कारण हिंदी साहित्य की पूरी शक्ल ही बदल गई है। जिसमे प्रमुखता से प्रतिलिपि, कविता कोश, गद्य कोश, स्टोरीटेल और ऑडिबल का प्रमुखता से समावेश है। ऑडिबल की वजह से आज कोई भी इंसान अपना काम करते समय भी उसे जो अच्छा लगता है सुन सकता है और उसका ज्ञानार्जन भी कर सकता है। डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य को सुलभा, समावेशी और वैश्विक बनाया है। अब कोई भी लेखक प्रकाशक की अनुमति के बिना ही उसकी रचना ब्लॉग या सोशल मिडिया पर डाल देते है तुरंत हो उसका फीडबैक भी मिलता है और इसी कारण उनके लेखन में जो कमियां है वह तुरंत पता चलती हैऔर सुधर की गुंजाईश बढ़ती है। उसकर साथ-साथ रील्स, ब्लॉग, पॉडकास्ट के माध्यम से साहित्य अब पढ़ने के साथ-साथ देखने और सुनाने योग्य भी बन गया है।

इस प्रकार डिजिटल युग ने हिंदी भाषा और साहित्य के बचाव का, मदद का कार्य भी किया है। और इससे हमें पता चलता है कि हिंदी भाषा और साहित्य का भविष्य उज्जवल है। भारत सरकार और निजी क्षेत्र दोनों ही डिजिटल इंडिया और भारतनेट जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओँ को बढ़ावा देने लिए प्रयासरत हैं। हिंदी में डिजिटल सामग्री को बढ़ाने के लिए कई स्टार्टअप और तकनिकी कंपनियां काम कर रही है। उदहारण के लिए हिंदी में वॉइस असिस्टेंट और चैट बॉट विकसित किए जा रहे है, जो भविष्य में हिंदी भाषाई उपयोकर्ताओं के लिए डिजिटल अनुभव को सरल बनाएँगे। साथ ही सोशल मिडिया और कंटेंट क्रिएटर्स की नै पीढ़ी हिंदी में रचनात्मक और प्रासंगिक सामग्री बना जा रही है जो युवाओं को आकर्षित कर रही है।

हिंदी का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि यह वैश्विक मंचों पर कितनी प्रभावी ढंग से अपनी जगह बना पाती है। डिजिटल युग में भाषाएँ केवल स्थानीय सन्दर्भ तक सिमित नहीं रहती, वे वैश्विक संवाद का हिस्सा बनती है। हिंदी को वैश्विक मंचों पर ले जाने के लिए इसे तकनीकी नवाचारों और अंर्तराष्ट्रीय सहयोग के साथ जोड़ा जाना होगा। उदहारण के लिए हिंदी को यूनिकोड और अन्य वैश्विक डिजिटल मानकों के साथ और अधिक एकीकृत करने की आवश्यकता है। साथ ही हिंदी साहित्य, सिनेमा और संस्कृति को डिजिटल माध्यमों के जरिए विश्व भर में प्रचारित करने के जरुरत है । हिंदी भाषी समुदाय की इसके डिजिटल भविष्य को आकर देने में महत्त्वपूर्ण होगी। अगर हिंदी भाषी लोग डिजिटल प्लैटफॉर्म पर अपनी भाषा में अधिक सक्रियता दिखाए, सामग्री बनाएं और उसका उपयोग करे, तो हिंदी की मांग स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी।

यह मांग तकनीकी कंपनियों को हिंदी के लिए बेहतर टूल्स और सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रेरित करेगी। इसके अलावा शिक्षा और प्रदर्शन के माध्यम से हिंदी भाषी युवाओं को डिजिटल साक्षरता प्रदान कारण भी आवशयक है, ताकि वे इस युग के अवसरों का पूरा लाभ उठा सके।

हिंदी का यह डिजिटल सफर न केवल भाषा की जीवंतता को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि

परिवर्तन के इस युग में भाषाएँ केवल संरक्षित नहीं होती बल्कि वे नए रूपों में फलती-फूलती है। इस प्रकार डिजिटल युग के कारण हिंदी भाषा और साहित्य को एक नई पहचान मिली है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि आज के सभी क्षेत्रों ने डिजिटल युग को अपनाते हुए अपना क्षेत्र और अधिक व्यापक और विस्तृत बनाया है। इसके साथ-साथ हिंदी भाषा के व्यापक होने से सांस्कृतिक एकता और आर्थिक अवसर भी बढ़ते हैं। यह देश के विभिन्न राज्यों के बीच संचार सुगम बनाकर आपसी व्यापार और सहयोग को भी गती देती है। आज सभी देशों में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है और उसी वजह से नए लेखक बन रहे है उन्हें भी अनुवाद, कंटेंट राइटिंग और फिल्म उद्योग के बड़े स्टार पर अवसर मिल रहे है। और इसी प्रकार हिंदी भाषा अपना साम्राज्य फैला रही है। डिजिटल युग ने यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और आज भी कर रहा है। हिंदी भाषा आज बाजार की ताकत बानी हुई है। जब कोई कम्पनी जैसे गूगल, अमेज़ॉन, मेशो अपनी सेवाएं हिंदी में देती है, तो वह करोड़ों नए ग्राहकों तक पहुँच पाती है। इसी कारण अर्थव्यवस्था अधिक मजबूत बनती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि हिंदी भाषा का दायरा केवल बातचीत तक सीमित नहीं है अपितु व्यावहारिक भी है।

डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य को लोकतान्त्रिक और वैश्विक बना दिया है। अब लेखक और पाठक के बीच की दुरी लगभग ख़त्म हो गई है। अब आसानी से इंटरनेट पर पुराणी दुर्लभ रचनाएं और शब्दकोश अब एक क्लीक पर उपलब्ध होते है। आज डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य को अपनी उँगलियों पर लाने के लिए बेहतरीन प्लेटफॉर्म भी मौजूद है। गूगल और केपीएमजी के रिपोर्ट के अनुसार आनेवाले वर्षों में भारत में इंटरनेट पर हिंदी उपयोगकर्ता अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं से दोगुने हो जाएंगे। क्योंकि आज हर क्षेत्र में हिब्दी भाषा बोलचाल की भाषा बन गई है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि डिजिटल युग में हिंदी एक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। यह एक और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को संजोएं हुए है, तो दूसरी ओर आधुनिक तकनीक के साथ कदम मिलाने की कोशिश कर रही है। अगर हिंदी भाषा को तकनीकी नवाचार, गुणवत्तापूर्ण सामग्री और सामुदायिक सहयोग का समर्थन मिले तो यह न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक प्रभावशाली डिजिटल भाषा की जीवंतता को दर्शाता है बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि परिवर्तन के इस युग में भाषाएँ केवल संरक्षित नहीं होती बल्कि वे नए रूपों में फलती -फूलती भी है। डिजिटल युग ने हिंदी का एक सरल और मिश्रित रूप (हिंग्लिश) लोकप्रिय हुआ है। जो शहरी युवावों की भाषिक पहचान बना है। उसी के साथ साथ युनिकोड तकनीक में आने से हिंदी में टाइपिंग और डेटा साझा करना अत्यंत आसान हो गया है। इस तकनीक ने टाइपिंग और अनुवाद को सरल बनाकर भाषा को अधिक गतिशील बना दिया है। और इसका साथ डिजिटल पुस्तकालयों और ओपन एक्सेस ने दिया है। डिजिटल पुस्तकालय साहित्यिक जगत में अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक ही बटन के क्लीक कर हजारो पुस्तक उपलब्ध करने के कार्य से यह हमेशा तत्पर रहता है। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसी पहले निशुल्क या सस्ती ई-बुक्स प्रदान करती है। इसके कारण हमें जो किताब चाहिए उसे तुरंत प्राप्त करते है और उस किताब की बातों का ज्ञानार्जन भी करते है। सोशल मिडिया साहित्य के प्रचार और उपभोग में एक प्रभावशाली साधारण के रूप में उभरा है, जो लेखकों तथा

पाठकों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने एवं साहित्यिक कृतियों की पहुँच के विस्तार के लिए अभिनव व नवोन्मेषी तरीके प्रदान करते है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य के विस्तार के कार्य में अत्यंत बहुमूल्य कार्य किया है। क्योंकि अगर डिजिटल युग न आता तो हमारी पांडुलिपियां है उनका ज्ञान हम तक न पहुँच पाता। लेकिन डिजिटल य उग के आने से हमें एक ही क्लीक में साडी बातें हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है। उसी प्रकार हिंदी भाषा के लिए भी उतना ही बहुमूल्य कार्य किया गया है। हिंदी का प्रयोग बोलचाल की भाषा से लेकर व्यावसायिक और शैक्षिक क्षेत्र में भी उतना ही महत्त्व है। बहुत से लोग अब ऑनलाइन कोर्सेस, डिजिटल मार्केटिंग और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों में हिंदी का उपयोग कर रहे है।

भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ता की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है और इनमे से अधिकतर उपयोगकर्ता हिंदी भाषी क्षेत्र से हैं। भविष्य में जैसे-जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीक का प्रसार बढ़ेगा तो हिंदी की मांग और भी बढ़ने की सम्भावना है। हिंदी भाषा सहज और सरल होने के कारण उसे लोग आसानी समझते है। और आसानी से संवाद भी कर सकते है। इसका उपयोग डिजिटल मिडिया में भी जोरो-शोरों पर हो रहा है। और इसी कारण हिन्द भाषा की सादगी और उसकी व्यापकता उसे अनन्य भाषाओँ से अलग और प्रभावी बनती है।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते है कि आज जब डिजिटल दुनिया में भाषाई विविधता को बढ़ावा दिया जा रहा है, हिंदी एक सशक्त माध्यम के रूप में उभर रही है। यह न केवल हमारी संस्कृति और पहचान को संजोने में मदद करती है बल्कि डिजिटल युग में हमें एक व्यापक और सशक्त आवाज भी प्रदान करती है। इसलिए यह समय है कि हम हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करें और हम अपनी भाषा और संस्कृति को और भी मजबूती से आगे बढ़ा सके।

संदर्भ सूचि:

1. https://the-net.eliterature.org/
2. https://hi.quora.com
3. हिंदीकुंज.com
4. https://www.setumag.com
5. actualdadilitreature.com